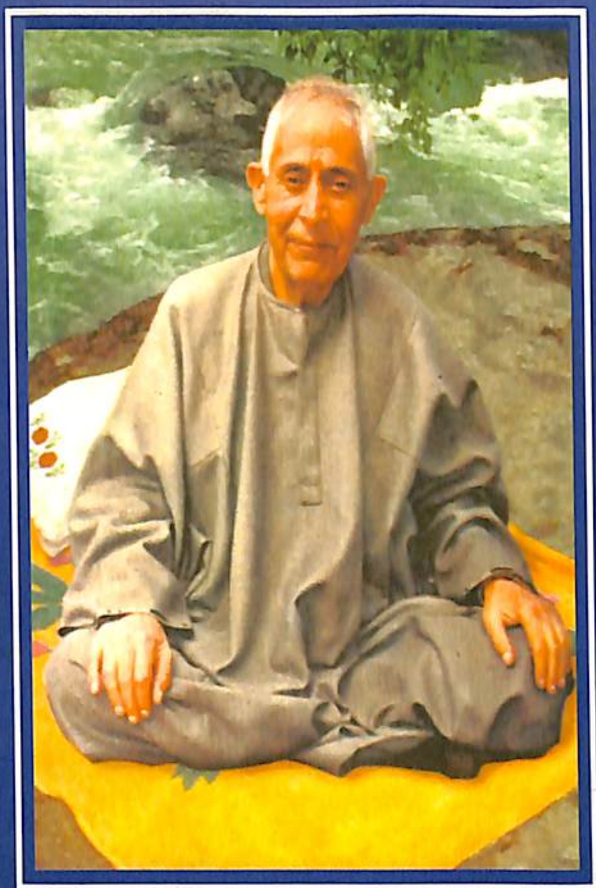
श्रीस्वामी चालीसा



ॐ सद्‌गुरवे श्री लक्ष्मणाय नमः

श्रीस्वामी चालीसा



ॐ सद्गुरवे श्री लक्ष्मणाय नमः

भैरवस्तोत्र तथा सद्‌गुरु आरती सहित
सद्‌गुरु चित्रकथा प्रस्तुति

प्रस्तुतिकर्ता

प्रो० मखनलाल कुकिलू

प्रकाशक

ईश्वर आश्रम ट्रस्ट

• इश्बर, श्रीनगर (कश्मीर)

• महेन्द्र नगर, जम्मू

• सरिता विहार, नई दिल्ली

दूरभाष : (0194) 2461657, (0191) 255575

(011) 26958308

5th May 2005

वैशाख कृष्ण द्वादशी

सद्‌गुरु जन्म जयन्ती

ॐ सद्‌गुरवे नमः

जय जय जय सुख सर्वकरन मेरे गुरुवर ईश।
पाश हरण दुःख द्वन्द्व मिटन नारायण जगदीश।।
जयति सुवन नारायणदासा।
अघदाहक भव ताप विनाशा।।

श्री नारायणदास "रैणा" के सुपुत्र श्री लक्ष्मण जू की जय जयकार हो। आप सारे पापों को भस्म करने वाले हैं तथा सांसारिक सन्तापों को नष्ट करने वाले हैं।।

"अरणिमाली" तव "कतिजी" अम्बा।
वात्सल्यमयी जो पावन गंगा।।

"कतिजी" के उपनाम से प्रसिद्ध सुश्री "अरणिमाली" आपकी माताश्री थी, जो वात्सल्य (मातृ प्रेम) की साक्षात् मूर्ति है तथा गंगा के समान स्मरण मात्र से ही पवित्र करने वाली है।।

भानु तिथि वैशाख कृष्णपक्ष।
जन्मे सद्‌गुरु द्वैत विनाशक।।
सात उन्नीस सौ था अति मोहक।
दिव्य अंश प्रकटे जगतारक।।

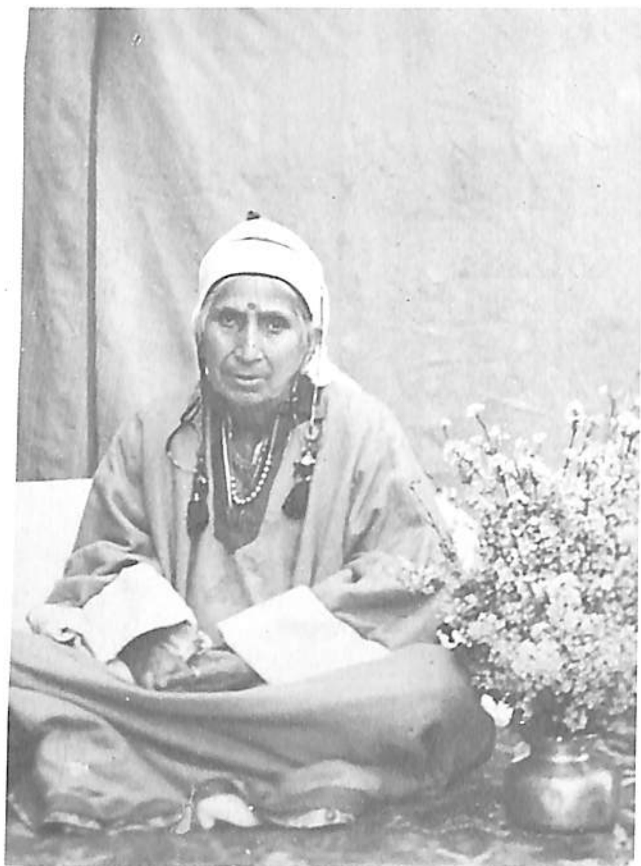


हे सद्गुरुदेव ! नौ मई सन् १९०७ वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी के दिन द्वैत भावना को उखाड़ने के लिए आप इस संसार में आये। यह एक असाधारण वर्ष था क्योंकि स्वर्ग से एक दिव्य अंश सारे संसार का उद्धार करने के लिए इस धरती पर आ उतरा।।

जब सन्देश "राम" ने पाया।
लगा नाचने सब कुछ त्यागा।।
तीव्र तार स्वर में चिल्लाया।
मैं हूँ 'राम' यह लक्ष्मण आया।।

हमारे स्वामीजी महाराज के परमगुरु "श्रीराम" को जब सद्गुरुदेव के पिताश्री ने पुत्रोत्पत्ति का संदेश सुनाया तो स्वामी राम दैनिक क्रिया-कलाप को छोड़कर प्रसन्नता के मारे नाचने लगे। वे ऊंची मधुर ध्वनि में पुकारने लगे कि मैं "राम" हूँ और यह अब "लक्ष्मण" आया। इस प्रकार इसी नाम से मेरे गुरुदेव बाद में प्रसिद्ध होने लगे।।

स्वामिन् गौतम गोत्र का धर्ता।
"काक" का यह प्रिय था भवभर्ता।।



सारे संसार के पालक मेरे गुरुदेव 'स्वामिन् गौतम'' गोत्र धारी थे। ये "काक" उपनाम से प्रसिद्ध श्री नारायण दास के लाडले थे।।

था किशोर सब विषय असंगा।

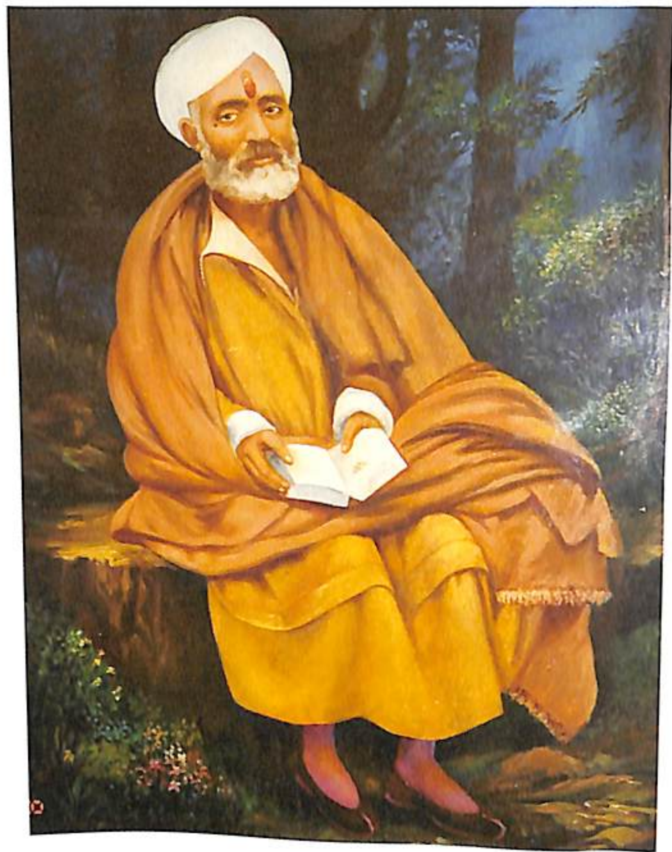
चहुँऊओर भव भक्ति में रंगा।।

बाल्यावस्था से ही मेरे सद्‌गुरुदेव समस्त सांसारिक विषय भोगों के लेप से निर्लिप्त थे। चारों ओर अर्थात् हर प्रकार से ये परमशिव की आराधना में लीन रहते थे।।

अग्रज "महेश्वर टोठ" से पाकर।

स्वात्मज्ञान की ज्योति प्रभास्वर।।

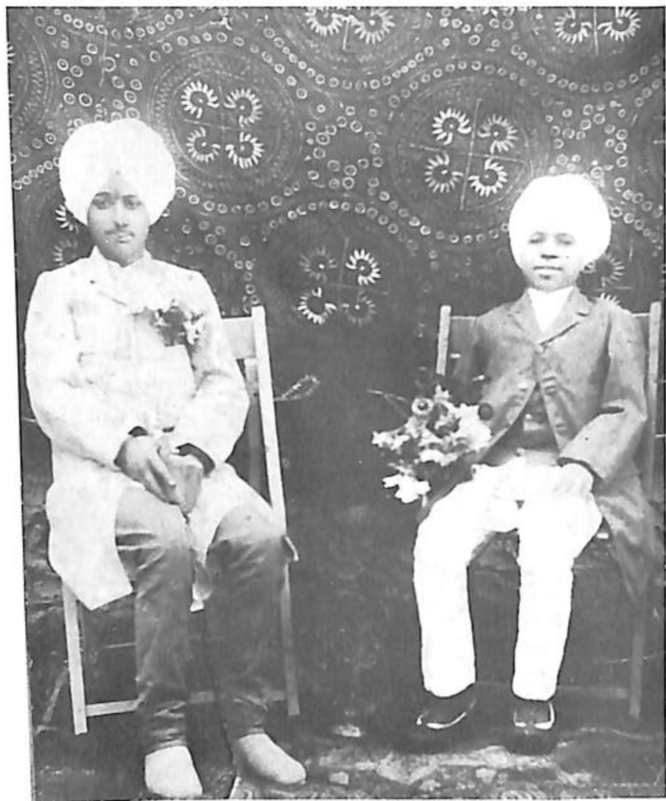
मेरे सद्‌गुरु देव का बड़ा भाई श्री महेश्वर टोठ' (अति प्रिय) के नाम से प्रसिद्ध था। उन्हें प्रतिदिन समाधि में लीन देखकर स्वामीजी महाराज उत्सुकभाव से उन्हें पूछा करते थे कि आप आंखें बन्द करके समाधि में किसका साक्षात्कार करते हो ? तो प्रत्युत्तर में वे कहा करते थे कि जो "बड़ि बुड़" अर्थात् जो सबसे इस विश्व में महान है, उसी का समाधि में वे



साक्षात्कार करते हैं। इसी देवाधिदेव की सुवर्ण प्रकाशमय संवित्-ज्योति से विद्योतित पाकर मेरे गुरुदेव भी अपने अग्रज के साथ साथ समाधिनिष्ठ हुआ करते थे।

विद्यागृह में जब पद डाला।
वहां भी चाव से शिवलिंग अरचा।।
यह विलोकि गुरु हुआ उदासा।
मन ही मन अपने को कोसा।।
यह बालक दिव्य लोक से आया।
विस्मयकारी इसकी माया।।

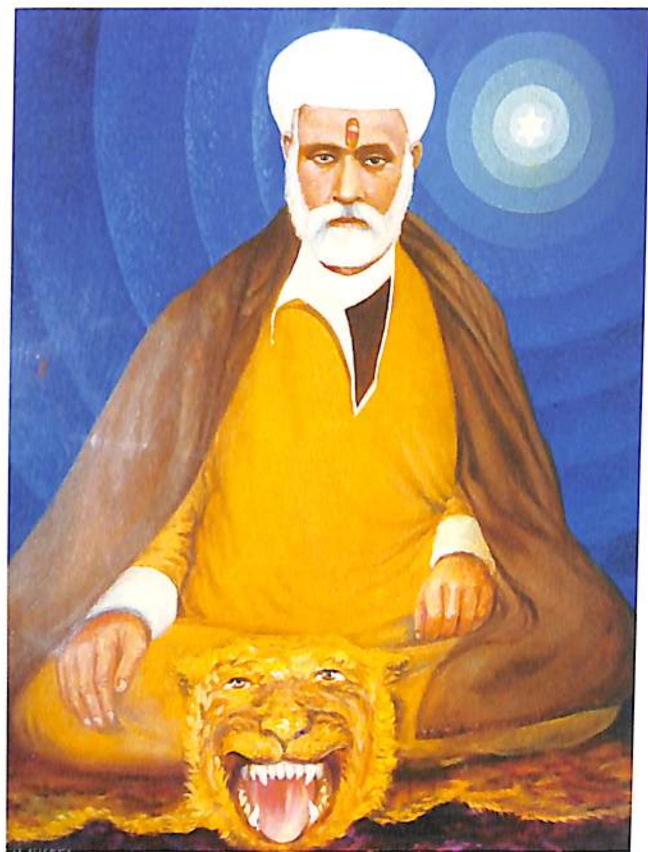
स्वामी जी महाराज ने जब स्कूल में दाखिला लिया तो वहां भी अपनी कक्षा में ये मिट्टी का शिवलिंग चाव से बनाते थे और उसी की पूजा करते थे। अपने कक्षा प्राध्यापक के व्याख्यान की ओर ध्यान न देकर अपनी कक्षा में अनुशासनहीनता के भय से कक्षा अध्यापक विभ्रान्त होकर मन ही मन अपने साथ साथ इस बालक को भी कोसने लगा और परिणामस्वरूप इसे अपने क्रोध का पात्र बनाया। अध्यापक से कुछ न



कहकर बालक लक्ष्मण घर लौटे। पर घर पहुंचते ही अध्यापकवर्य इनके आक्रोश का पात्र बना तथा तब तक विक्षिप्तचित्त और अस्वस्थ रहा जब तक इस बालकवर्य से अपने क्रोध के लिए क्षमा नहीं मांगी। अध्यापक ने अन्त में इस बात को अच्छी तरह से भांपा कि यह बालक सामान्य बालक न होकर दिव्यलोकवासी प्रतीत होता है। इसकी माया अत्यन्त आश्चर्यकारी है।

जगचर्चा के रस से ऊबा।
पहले से ही ज्ञान में डूबा।।
था लक्ष्मण, श्री राम ने सौंपा।
को महताब जो शिष्य दुलारा।।
नाम सदृश वह सूर्य तुल्य था।
रामदेव का छुपा सितारा।।

मेरे गुरुदेव सांसारिक विषय रसों की चर्चा से सदा दूर रहा करते थे क्योंकि उनके अन्तस्तल को ज्ञान की ज्योति ने जन्म से ही जगमगाया था। ऐसे ज्ञानी बालक को, उनके परम गुरु श्री राम ने सूर्य



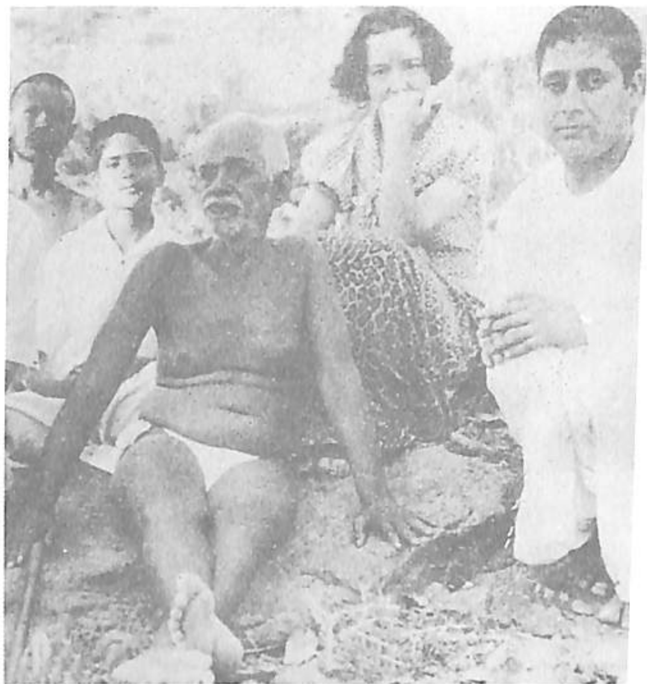
समान तेजस्वी अपने प्रधान प्रिय शिष्य महताब काक को, जो उनका चहेता था, सादर सौंपा।।

पाकर तत्त्वज्ञान भवतारक।
लगा पनपने यह सिंहशावक।।

इस संसार सागर से उद्धार करने वाले आत्म-ज्ञान को अपने गुरुमहाराज श्री महताब काक से पाकर बालक लक्ष्मण शेर के बच्चे के समान दिन प्रतिदिन पनपने लगा।।

प्राणवाहिनी इडा पिंगला।
सन्धि स्थान की बनी भास्वरा।।

मेरे सद्गुरु, अपने गुरु महाराज श्री महताब काक से दीक्षा पाकर प्राणपानाभ्यास की चरमसीमा में सतत परायण रहते थे। बायें ओर की प्राण वाहिनी इडा नाडी, दायें ओर की अपान वाहिनी पिंगला नाड़ी, प्राण अपान के मध्य में पाई जानेवाली विश्रान्तिमयी सन्धिरूपवाली, विषुवत् या अभिजित् नाम से भी प्रसिद्ध कृत्य शून्या अथात् प्राण और अपान गति से रहित सुषुम्नी नाड़ी में लीन होकर उनका प्राणापान अभ्यास प्रकाशमान



(भास्वर) बना था।।

दूज चांद सा कोमल दर्शी।
राकेन्दु सम अति तेजस्वी।।
सद्‌गुरु त्रिकदर्शन अर्णव में।
निर्भय लगा तैरने पल में।।

मेरे सद्‌गुरुदेव, दूज की चन्द्र कला के समान अत्यन्त कोमल दिखाई देते थे पर थे वास्तव में पूनम के चन्द्रमा के समान अतीव तेजस्वी। वे त्रिकदर्शन रूपी अर्थात् कश्मीर शैवदर्शनरूपीसागर में भयरहित होके पल में ही तैरने लगे।।

शिव शासन के पूर्ण विद्वत्‌वर।
राजदान 'महेश्वर' गुरुवर।।
तन्त्रालोक निगम आगम खर
रवि से सोऽहं तत्त्व समझकर।
लगे बांटने अमृत आकर।
देशिक सद्‌गुरु पद को पाकर।
देशिक गुरु सम दूजो नाही।
निग्रह अनुग्रह के यह सांई।।

हमारे सद्गुरु महाराज के विद्यागुरु शैवशास्त्रों के पूर्ण ज्ञाता श्री महेश्वर राजदान थे। शैव शास्त्रों, निगम ग्रन्थों आगमों और तन्त्र साहित्य का पूर्ण प्रकाश सूर्य सम प्रखर प्रकाशधारी विद्या गुरु से सोऽहं तत्त्व को प्राप्तकर, सद्गुरु महाराज शैवी गुरुपदवी पर समासीन होके उस अमृत निधि को प्यासे भक्तों में बांटने लगे। शैवी गुरुपदवी को पाना साधारण बात नहीं, क्योंकि शैवी गुरु ही एकमात्र ऐसे गुरु होते हैं जो निग्रह और अनुग्रह अर्थात शक्ति संकोच और शक्तिपात के सबल अधिकारी होते हैं।।

अनुभव ज्ञान पताका उनकी।
लगी फैलने सर्वव्यापिनी।।
सूफी ज्ञानी सन्त व मुनिजन।
ज्ञानार्जन को नतमस्तक बन।।
दीक्षा पाने को उत्सुकमन।
लगे सौंपने अपना तन धन।।

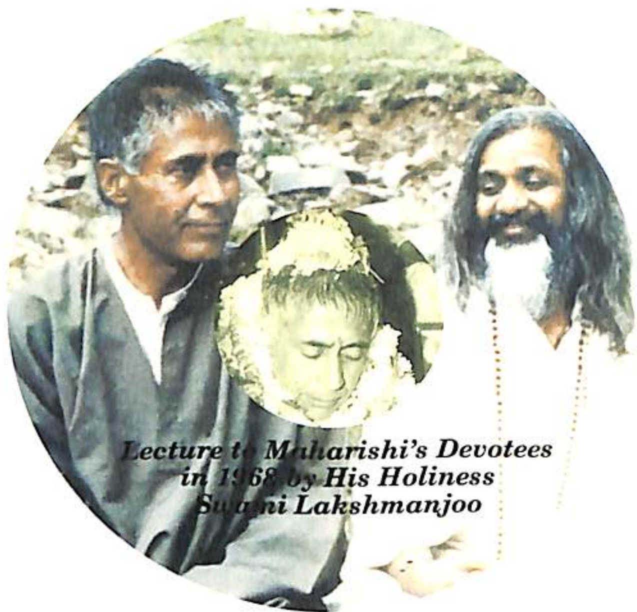
सद्गुरु देव ने थोड़े ही समय में जो स्वात्म ज्ञान और अनुभव प्राप्त किया उसकी विस्तृत चर्चा चारों ओर

से होने लगी। सब ओर से 'सूफी' सन्त ज्ञानी और मुनि लोग सिर झुकाकर इनसे अद्भुत ज्ञानमयी दीक्षा प्राप्ति के लिए तड़पने लगे। वे अपना सर्वस्व इन पर न्योछावर करने को आतुर हुए।।

देशी विदेशी बुद्धिजीवी गण।
जाति वर्ण रंग भेद से उन्मन।।
अन्तस्तल को करने पावन।
अर्चा इनको तजि अपनापन।।

स्वदेशी और विदेशी मनीषी (विद्वान् लोग) जात, पात वर्ण आदि के बखेड़े से दूर होके इनसे विद्या अर्जन कर अपने हृदय को पवित्र करने लगे और अपना निजत्व तजकर (छोड़कर) भक्तिभाव से इनकी पूजा करने लगे।।

सबको दिया यह ज्ञान समान।
स्वात्मा की कर लो पहचान।।
भिन्न अपने से इसे न जान
स्वतः सिद्ध है इसका ज्ञान।।
यही लक्ष्य है सन्धि स्थान

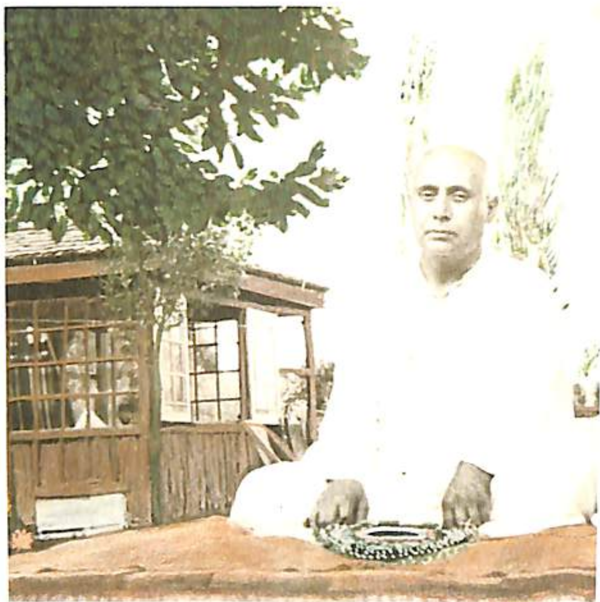

Lecture to Maharishi's Devotees
in 1968 by His Holiness
Swami Lakshmanjoo

इसी को शिव सायुज्य तू मान।।

सद्गुरु देव ने सभी को समानरूप से इस तथ्य को समझाया था कि अपनी आत्मा को स्वयं पहचानो। हम इसे अपने से अलग समझकर इसके स्वरूप को भूल बैठे। वास्तव में यह ज्ञान स्वतः सिद्ध है। समस्त प्राणियों के जीवन का एक मात्र लक्ष्य अपनी आत्मा की पहचान करना है। इसी लक्ष्य प्राप्ति से शिव-तन्मयीभाव का सपना पूरा हो सकता है।।

विरक्तिभाव जब लगा घेरने।
सर्वैषणा तजी महेश ने।।
लिई ओट सघन कानन में।
साधु सरित् के रम्य प्रांगण में।।
शिवसायुज्य के रंग में रंगकर।
बने तपस्वी मेरे गुरुवर।।
स्वामी नाम से बने ख्याति धर।
मन्त्रमुग्ध कर सब जन हितकर।।

सद्गुरुदेव को जब वैराग्यभाव ने अत्यधिक घेरा तब वे समस्त सांसारिक कामनाओं से विमुक्त



हुए। तदनन्तर एकदिन घर से भागकर घने जंगल से विभूषित साधु-गंगा नामक स्थान के सुन्दर प्रांगण में इन्होंने शरण ली। वहां शिवतन्मयीभाव के रंग में रंगकर सद्गुरुमहाराज पूर्ण तपस्वी बने। स्वामी उपपद से शोभित लक्ष्मण जू की प्रसिद्धि चारों ओर से फैलने लगी। वे सबों को अब अपनी मन्त्रविद्या से मोहित करने लगे तथा साथ ही साथ सबों का कल्याण करने में दत्तचित्त रहे।।

महादेवगिरि उपत्यका में।
ईश्वर-आश्रम के परिसर में।।
कुटी बनाकर पूर्ण काम बन।
लगे सतत करने तत्त्व चिन्तन।।

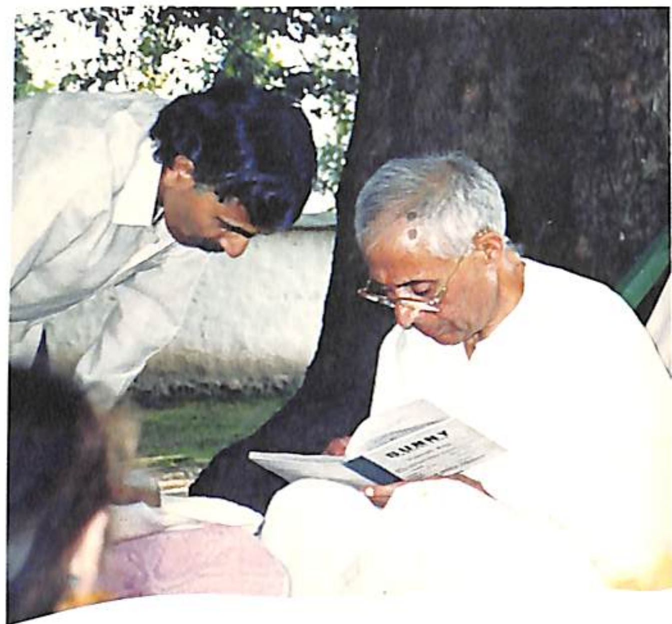
फिर कुछ समय के पश्चात् सद्गुरुदेव ने महादेव-पर्वत की तराइयों में, ईश्वर-आश्रम का निर्माण किया जहां एक छोटा सा घर बनाके उनकी इच्छा पूर्ण हुई। यहीं पर वे फिर निरन्तर रूप से परमार्थ चिन्तन क्रिया में जुट पड़े।।



सोमेश्वर शिव सोमवार दिन।
बैठे रहते मौन मग्न बन।।
सब भक्तों शिष्यों के चिरतन।
बिगडे कर्म वे करते सम्पन्न।।

शिवरूप सद्‌गुरुदेव सोमवार के दिन मौन व्रत धारण कर अपने आनन्द में लीन रहा करते थे। पर यह बात उल्लेखनीय थी कि रविवार के दिन अपने भक्तों और शिष्यों के बहुत समय से अटके हुए कर्मों को याद कर इसी सोमवार के दिन ध्यानावस्था में संपूर्ण किया करते थे।

सप्ताह के अन्तिम सुपर्व पर।
प्रातः सब आते घर तजकर।।
सद्‌गुरु पूजा में रत होकर।
सद्‌गुरु को निज सम्मुख पाकर।।
शास्त्रों के व्याख्या जलौघ से
अपने मन और तन को धुलकर।।
आप्त काम वहां से आकर।
अपने को कृतकृत्य समझकर।।



रविवार के दिन सद्‌गुरु महाराज के सारे शिष्य, भक्त व प्रेमी अपने अपने घरों को छोड़कर सद्‌गुरु की पूजा में ईश्वर आश्रम में सम्मिलित होते थे और वहां सद्‌गुरुदेव को अपने सम्मुख पाकर प्रसन्न होते थे। ईश्वर आश्रम में सद्‌गुरुदेव के मुखारविन्द से निकले विभिन्न शास्त्रों के व्याख्यानों रूपी निर्मल जल प्रवाह से अपने तन और मन को धोते थे। एवं सारा उपस्थित जन समुदाय संपूर्ण इच्छा वाला होकर वहां से लौट अपने को कृतार्थ समझता था।।

चलता रहा अबाध यही क्रम।
जब तक सारे भक्त थे निर्भ्रम।।
आतंक झंझा ने फिर छितरी।
सभ्य समाज की सुस्थिर छतरी।।
यह न सहन कर मेरे गुरुवर।
हुए लीन शिव में शिव बनकर।।

रविवासरीय कार्यक्रम का यह सिलसिला तबतक ईश्वर-आश्रम में निर्विघ्न बहुत देर से चलता रहा, जब तक सारे शिष्य गण, प्रेमी व भक्तजन निर्भ्रान्त थे।





अचानक दैवी प्रकोप के परिणाम स्वरूप आतंकवाद रूपी तेज आंधी ने हमारे सभ्य समाज का सुदृढ़ ढांचा ही तितर-बितर किया। दुर्भाग्यवश हमारे गुरुदेव इस व्यथाकथा को सहन न कर शिव बनकर ही शिवलोक पधारे।।

आश्विन कृष्ण चौथ को भास्कर।
सारे विश्व को तम आवृत कर।।
तेज पुंज अपना समेट कर।
दुर्दिन घन में हुआ अगोचर।।

असूज महीने की कृष्ण पक्ष चतुर्थी को कश्मीर शैव दर्शन के सूरज ने अचानक सारे संसार को अन्धकार से घेरा। तदनन्तर अपना सारा प्रखर प्रकाश समेटकर अनन्तधाम में यह दिनकर ओझल हुआ।।

हृदय विदारक वार्ता सुनकर।
पिक के कण्ठ का रुंधा मधुर स्वर।।
हृदय गुहा को तितर बितरकर।
लगा विलखने हे प्रिय गुरुवर ! ।।
हे प्रिय लक्ष्मण ! हे भव भयहर।

थामते रहियो अति कर्कश कर।।
सदा मैं पकडूँ तेरा दामन।
वर दो धन्य करो मम जीवन।।

सद्गुरु देव की हृदय दहलाने वाली प्रयाण वार्ता सुनकर हमारी हृदयरूपी गुफा में अंधेरा छाया और हमारी मीठी आवाज अवरुद्ध हुई। इसी दबी आवाज में हम सब जोर जोर से चिल्लाने लगे कि हे हमारे प्राणप्रिय गुरुदेव ! हे हमारे प्यारे लक्ष्मण ! हे संसार के भय को दूर करने वाले, आप कहां चले। पाप कर्म करते करते कठोर बने हुए हमारे हाथों को थामते रहना। हे सद्गुरु ! वह वरदान देकर हमारे जीवन को कृतकृत्य करो कि हमारा तुम्हारा चोली दामन का साथ सदा रहेगा।।

हे विषमेक्षण ! श्वेताम्बरधर !
हे भद्रंकर । हे मलत्रय हर !
हे वसुगुप्त सूत्र व्याख्याकर !
सोमानन्द के शिवशासन धर
उत्पलदेव के भक्ति सुधाकर
अभिनव गुप्त के अभिनव मुख वर

तन्त्रालोकज रसास्वादकर
मर्म मर्म में उसे समाकर
भैरव आगम के टीकाकर
पूर्वशास्त्र के ह्रीं बीजाक्षर
अभिनवगुप्त गीता टीकाकर
अभिनव भाष्य से मन ललचाकर
पंचस्तवी स्तुति पुस्तिका,
की रहस्य ग्रन्थियां खोलकर
परा कुण्डली को समझाकर
विश्वनाथ नगरी ललचाकर
त्रिकदर्शन के विज्ञ जनों व
आंग्लदेशी प्रान्तवासियों
की अन्तस्तम दोहद ईहा
पूरण करके बने नामधन्य
हे श्री लक्ष्मण ! हे श्री लक्ष्मण !
जीवन के आधार प्राणपन
दया करो अब दया करो अब
बनूँ सदा तव भक्ति का जोगन



हे श्री लक्ष्मण ! हे श्री लक्ष्मण !

हे त्रिनोत्रधारी ! हे सफेद वस्त्रों को धारण करने वाले !

हे सबों का कल्याण करने वाले ! हे आनवमल, मायीयमल और कार्ममल' इन तीन मलों को नष्ट करने वाले हे आचार्य वसुगुप्त के शिवसूत्रों के रहस्यपूर्ण अर्थ को प्रकाशित करने वाले ! हे सोमानन्द के 'शिव-दृष्टि शास्त्र" के मर्मज्ञ ! हे सोमानन्द के शिष्य आचार्य उत्पलदेव के भक्तिरूपी चन्द्रमा ! हे आचार्य अभिनवगुप्त के अभिनव शक्ति स्वरूप ! हे तन्त्रालोक के मन्थन से उत्पन्न रसातिशय के आस्वाद से परिपूर्ण तथा प्रत्येक मर्म में उस रस को समाये हुए ! हे "विज्ञान भैरव नामक भैरव आगम ग्रन्थ के टीकाकार ! हे मालिनी विजय तन्त्र के सारभूत 'ह्रीं' शक्ति बीजाक्षर स्वरूप ! हे श्रीमद्भगवत् गीता पर अभिनव भाष्य से मन को ललचाने वाले अभिनव गुप्त रचित रहस्यमयी व्याख्या के व्याख्याकार ! हे धर्माचार्य रचित पञ्चस्तवी नामक शक्ति परक स्तुति पुस्तिका की गूढ़ ग्रन्थियों को

सुलझाने वाले ! हे कुण्डलिनी रहस्य की वास्तविकता को खोलकर 'काशी नगरी' में आयोजित तन्त्र सम्मेलन के सदस्यों को अचम्भे में डालने वाले ! हे कश्मीर शैव दर्शन (जो त्रिक दर्शन के नाम से भी प्रसिद्ध है, के विद्वानों की अनन्यतम इच्छा शक्ति स्वरूप हे ! विदेशी विद्वानों, देशी विद्वानों और भिन्न-भिन्न प्रान्तों से समुपस्थित जिज्ञासुओं की अभीष्टतम मानसिक इच्छा को संपूर्ण करके स्वनाम धन्य बने हे श्री लक्ष्मण ! हे मेरे जीवन के आधारभूत ! हे मेरे प्राणों के प्रिय ! अब हम पर दया करो जिसके परिणाम स्वरूप हम आपकी अभीष्ट भक्ति के जोगन बनेंगे। हे श्री लक्ष्मण ! हे श्री लक्ष्मण हमें आपका ही सहारा है।।

जय गुरुदेव।

श्री लक्ष्मणाष्टकम्

विश्वेश्वरं सदाशिवं कृपाकरं गणार्चितम्।
सनातनं निरञ्जनं नमामि दैशिकं गुरुम्।।

सुरासुरैः सदा स्तुतं त्रितापनाशकं परम्।
विद्युत्प्रकाशसदृशं नमामि सद्गुरुं शिवम्।।

मातृमानमेयरूप सोम सूर्य पावकम्।
सर्वसौख्यदायकं नमामि सद्गुरुं शिवम्।।

अगाध शास्त्र सागरं अचिन्त्यकर्मकारकम्।
विभास्वरं तमोनुदं नमामि सद्गुरुं शिवम्।।

सदा नतार्ति नाशकं अख्याति ग्रन्थिभेदकम्।
कृपाकरं मनोहरं नमामि सद्गुरुं शिवम्।।

गुरुं विभुं च व्यापकं सुलक्षणैः सुशोभितम्।
सुरेश्वरं विभूतिदं नमामि सद्गुरुं शिवम्।।

शैव दर्शनाकरं अचिन्त्य तत्त्व ज्ञापकम्।
धर्ममूर्तिधारकं नमामि सद्गुरुं शिवम्।।

दयार्द्रभावप्रेरकं असीमशांतिदायकम्।
समस्त पापनाशकं नमामि लक्ष्मणं शिवम्।।

गुर्वष्टकं महत्पुण्यं भक्तिभावोपबृंहितम्।
पिकेन रचितं स्तोत्रं गुरुभक्तिफलावहम्।।

जय गुरुदेव।

भैरवस्तुतिः

व्याप्त चराचरभाव विशेषं, चिन्मयमेकमनन्तमनादिम्।
भैरवनाथमनाथशरण्यं तन्मय चित्ततया हृदि वन्दे।।
त्वन्मयमेतदशेषमिदानीं भाति ममत्वदनुग्रहशक्त्या।
त्वं च महेश सदैव ममात्मा स्वात्ममयं मम तेन समस्तम्।।
स्वात्मनि विश्वगते त्वयि नाथे तेन न संसृतिभीतेः कथास्ति।
सत्स्वपि दूर्धर दुःख विमोह त्रास विधायिषु कर्म गणेषु।।
अन्तक मां प्रति मा दृशमेनां क्रोधकरालतमां विदधीहि।
शंकर सेवन चिन्तन धीरो भीषण भैरव शक्तिमयोऽस्मि।।
इत्थमुपोढ़भवन्मय संवित् दीधिति दारित भूरितमिस्त्रः।
मृत्युर्यमान्तक कर्म पिशाचैर्नाथ नमोऽस्तु न जातु बिभेमि।।
प्रोदति सत्य विबोध मरीचि प्रोक्षित विश्व पदार्थ सतत्वः।
भाव परामृत निर्भर पूर्णे त्वय्यहमात्मनि निर्वृत्तिमेमि।।
मानस गोचरमेति यदैव क्लेशदशातनुताप विधात्री।
नाथ ! तदैव मम त्वदभेद स्तोत्र परामृत वृष्टिरुदेति।।
शंकर सत्यमिदं व्रतदानस्नान तपो भवताप विनाशि।
तावक शास्त्र परामृत चिन्तास्यन्ध्यति चेतसि निर्वृत्तिधारा।।
नृत्यति गायति हृष्यति गाढं संविदियं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनमेकं दुर्लभमन्य जनैः समयज्ञम्।।

वसुरसपौषे कृष्ण दशम्यामभिनवगुप्तः स्तवमिममकरोत्।
येनविभुर्भवमरुसन्तापं शमयति झटिति जनस्य दयालुः।।
हरिरेव जगत् जगदेव हरिः हरितो जगतो न हि भिन्नमणुः।
इति यस्य मतिः परमार्थगतिः स नरो भवसागरमुत्तरति।।
आदौ अन्ते चिद्रसरूपं मध्ये चिद्रस बुद्बुदरूपम्।
भातं भातं भारूपंस्यात् नो भातं चेन्नितरां न स्यात्।।



आरती गुरुदेव की

जय गुरुदेव हरे जय जय गुरुदेव हरे,
मम सद्गुरु श्रीलक्ष्मण क्षण में कष्ट हरे।। १।।
सबलक्षण सुन्दर तू सर्वसंकट हारी।
अन्तस्तमहर्ता तू भव अर्णव तारी।। २।।
सौम्यमूर्ति तू साजे अवहितजन ध्यावे।
भुक्ति-मुक्ति के दाता मांगत कर जोरे।। जय।। ३।।
जिस दिन तुझको पाया निखर उठी काया।
भव बन्धन सब बिखरे हरली मम माया।। जय।। ४।।
हे मम सद्गुरु ! हर लो दुष्कृत जन्मों के।
मेरे पालनकर्ता द्वार पड़ा तेरे।। जय।। ५।।

मल मेरे सब काटो हृदयकमल विकसे।
अन्तस्त्रय मेरा नित तुझ में लीन रहे।। जय।। जय।। ६।।
श्रीगुरुपद से जन्मे धूल से भाल सजे।
विधि के कलुषित अक्षर विनशे हिम जैसे।। ७।।
तनमन सौंपूं तुझको हे सद्गुरु प्यारे।
नाम स्मरण जप में नित, रहूं मगन तेरे।। जय।। ८।।
मैं बुद्धिहीन हूँ चंचल तन मेरा निर्बल।
एकबार अपनाओ जन्म सफल होवे।। जय।। ९।।
श्रीलक्ष्मण गुरुदेव की आरती जो गावे।
वह शिवभक्त निःसंशय शिवसम हो जावे।। १०।।
जय गुरुदेव हरे जय जय गुरुदेव हरे।
मम सद्गुरु श्रीलक्ष्मण क्षण में कष्ट हरे।।

जय गुरुदेव।